

डॉ. डेविड टर्नर, गॉस्पेल ऑफ़ जॉन, सत्र 21, उत्पत्ति 1 और जॉन 1

© 2024 डेविड टर्नर और टेड हिल्डेब्रांट

यह जॉन के सुसमाचार पर अपने शिक्षण में डॉ. डेविड टर्नर हैं। यह सत्र 21, उत्पत्ति 1 और जॉन 1 है।

नमस्कार, अब हमने जॉन पर अध्याय-दर-अध्याय अपने वीडियो पूरे कर लिए हैं और हम वीडियो के सेट के अंत में जॉन के सुसमाचार के बाइबिल धर्मशास्त्र पर कुछ सत्र रखने जा रहे हैं। पहले वाले को हमने उत्पत्ति 1 और जॉन 1 का शीर्षक दिया है। हम जॉन 1 के बीच अंतर्पाठ्यता का पता लगाने का प्रयास कर रहे हैं क्योंकि यह उत्पत्ति 1 की ओर इशारा करता है और जॉन 1 में लोगो की प्रकृति और इसके निर्माण के सिद्धांत को समझने का प्रयास कर रहे हैं। वहां पढ़ाया जाता है।

यह मेरे लिए स्पष्ट है कि जब जॉन उत्पत्ति अध्याय 1 का उल्लेख करता है, तो वह हमें केवल यह बताने का प्रयास नहीं कर रहा है कि यीशु, नए नियम में परमेश्वर का वचन, पुराने नियम का निर्माता है। वह हमें यह सिखाने के लिए सृजन के उस सिद्धांत पर निर्माण करने का प्रयास कर रहा है कि यीशु मूल दुनिया को उसी रूप में नवीनीकृत कर रहा है जैसे वह बनाई गई थी। वह दुनिया का पुनर्निर्माण कर रहा है, ऐसा कहने के लिए न केवल उस पर मूल रूप से प्रकाश डालकर, बल्कि सुसमाचार के प्रकाश के माध्यम से दुनिया को नवीनीकृत करके जो उस पर केंद्रित है।

इसलिए, मैं इस पेपर को कंप्यूटर से पढ़ंगा इसलिए लगातार आंखों के संपर्क में कमी के लिए मैं क्षमा चाहता हूं। मुझे उम्मीद है कि अच्छी प्रस्तुति की कमी को दूर करने के लिए सामग्री पर्याप्त होगी। उत्पत्ति अध्याय 1 के प्रकाश में जॉन अध्याय 1 का अध्ययन करने के लिए हमें उन सभी ऐतिहासिक, भाषाई, सांस्कृतिक और धार्मिक पहलुओं के बारे में सोचने की आवश्यकता है जो व्याख्या के अनुशासन में शामिल हैं।

सख्ती से ऐतिहासिक व्याख्या के विकल्प के रूप में धर्मशास्त्रीय व्याख्या का हालिया उदय बाइबिल के ग्रंथों के प्रति किसी भी दृष्टिकोण को चुनौती देता है जो उन्हें कड़ाई से उद्देश्यपूर्ण पद्धति से संभालने और कैनन की व्याख्या के इतिहास के किसी भी योगदान के अलावा तटस्थ मूल्यों के साथ निष्कर्ष पर पहुंचने का इरादा रखता है। संपूर्ण, पुराना नियम और नया नियम दोनों। मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से, उन मौलिक ग्रंथों के नए नियम के उपयोग के बारे में जागरूकता और उससे प्रभावित हुए बिना पुराने नियम को पढ़ना असंभव और अनुचित भी है। इसलिए, मैं अपनी पूर्वनिर्धारितताओं को स्वीकार करने और व्याख्यात्मक प्रक्रिया के दौरान उन्हें आत्म-सचेत रूप से लागू करने का प्रयास करता हूं।

मैं नए नियम पर पुराने नियम के प्रभावों को समझने की कोशिश कर रहा हूं, नए नियम को पुराने नियम की व्याख्या के इतिहास के आधिकारिक हिस्से के रूप में देख रहा हूं। इस अध्ययन के

लिए व्याख्या का सबसे महत्वपूर्ण पहलू सामान्य रूप से बाइबिल कथा और विशेष रूप से उत्पत्ति और चौथे सुसमाचार की शैली हो सकता है। सामान्य तौर पर बाइबिल की कथा के संबंध में, किसी को इस बात पर विचार करना चाहिए कि कथाएँ धार्मिक उद्देश्यों के लिए इतिहास को कैसे चित्रित करती हैं।

विशेष रूप से जॉन के गॉस्पेल के संबंध में, किसी को एक पाठ शामिल करना चाहिए, जो ल्यूक टिमोथी जॉनसन के शब्दों में, शैलीगत रूप से सरल लेकिन प्रतीकात्मक रूप से सघन हो। क्लेमेंट द्वारा जॉन को एक आध्यात्मिक सुसमाचार के रूप में वर्णित करने के बारे में हमें कुछ आपत्तियां हो सकती हैं, लेकिन इसकी विशिष्टता पर संदेह नहीं किया जा सकता है। डॉन कार्सन का सुझाव कि आध्यात्मिक का अर्थ रूपक या यहां तक कि प्रतीक-युक्त भी हो सकता है, एक अच्छा मुद्दा प्रतीत होता है।

जॉन की यह समझ यहां पूछे जाने वाले एक प्रश्न को निर्धारित करने के लिए निर्णायक है। जॉन किस हद तक नई रचना या सृष्टि के नवीनीकरण के धर्मशास्त्र का इरादा रखता है? एक और महत्वपूर्ण मुद्दा, विशेष रूप से सृजन से संबंधित बाइबिल पाठ की व्याख्या के क्षेत्र में, जिसे जॉन वाल्टन सामंजस्यवाद कहते हैं। कॉनकॉर्डिज्म एक गैर-सलाह वाले दृष्टिकोण के लिए वाल्टन का शब्द है जो आधुनिक वैज्ञानिक सिद्धांतों को, चाहे वे कुछ भी हों, प्राचीन बाइबिल ग्रंथों में इस धारणा पर पढ़ता है कि बाइबिल स्वयं वर्तमान वैज्ञानिक प्रश्नों पर सीधे बात करने का इरादा रखता है और यह वर्तमान से सहमत होगा वैज्ञानिक सिद्धांत।

सामंजस्यवाद की दोहरी समस्या यह है कि यह मौजूदा वैज्ञानिक सिद्धांत के साथ शास्त्रीय शिक्षण का मिलान करने के अपने प्रयास में धर्मग्रंथ की ऐतिहासिकता को कम कर देता है, जिसकी अपनी ऐतिहासिकता और अल्पकालिक प्रकृति को इस प्रक्रिया में कम करके आंका जाता है। यह अध्ययन इंटरटेक्स्टुअल विवरण और विषयगत कनेक्शन के माध्यम से जॉन 1 में पाए गए उत्पत्ति 1 के संकेतों को विकसित करेगा जो सृजन और नई रचना के प्रारंभिक जोहानिन धर्मशास्त्र की ओर ले जाएगा। इस तरह का अध्ययन बाइबिल पाठ के घनत्व के कारण शब्द के किसी भी अर्थ में पूर्ण होने की उम्मीद नहीं कर सकता है, पाठ पर माध्यमिक साहित्य की प्रचुरता का उल्लेख नहीं किया जा सकता है।

मैं मान रहा हूँ कि जो भी रचनात्मक प्रक्रियाएं चल रही थीं, जॉन के गॉस्पेल की प्रस्तावना को अंततः चौथे गॉस्पेल के बाकी हिस्सों के साथ पारस्परिक रूप से सूचित तरीके से एक कैनोनिकल संपूर्ण के रूप में पढ़ने का इरादा था। मैं हाल के कई विद्वानों के विचार को भी मान रहा हूँ कि सामान्य रूप से न्यू टेस्टामेंट जोहानाइन कॉर्पस का प्राथमिक परिवेश और विशेष रूप से जोहानाइन प्रस्तावना, ग्रीक और दार्शनिक के बजाय यहूदी और बाइबिल है। अधिक विशेष रूप से, जोहानाइन प्रस्तावना के पीछे मौजूद प्राचीन मौलिक ग्रंथ उत्पत्ति 1 और निर्गमन 33 और 34 हैं, आम युग की पहली शताब्दी में मौजूद अन्य यहूदी ग्रंथों के प्रभाव के बारे में कोई कुछ भी कह सकता है।

मुझे ऐसा लगता है कि जोहानाइन प्रस्तावना इन दो प्रमुख ग्रंथों, उत्पत्ति 1 और निर्गमन 33 और 34 पर एक प्रकार का अंतर्निहित मिद्राश है। इस पर एक संक्षिप्त टिप्पणी आवश्यक है कि क्या

अन्य यहूदी ग्रंथ जॉन 1 और उत्पत्ति 1 के बीच प्रशंसनीय साहित्यिक मध्यस्थ हैं। यह स्पष्ट है कि चौथा सुसमाचार शून्य से नहीं बल्कि प्राचीन सामाजिक-ऐतिहासिक परिवेश से लिखा गया था।

इस परिवेश में संभवतः ऐसे पाठ शामिल थे जो उत्पत्ति 1 को इस प्रकार प्रतिबिंबित करते थे कि चौथे सुसमाचार के लेखक ने इसे उपयोगी समझा। ऐसे प्रशंसनीय साहित्यिक मध्यस्थ जिनके विचार जॉन की शिक्षाओं के साथ कुछ हद तक संगत थे, उनमें नीतिवचन 8 के समान यहूदी ज्ञान ग्रंथ शामिल होंगे, जैसे कि सिराच, अध्याय 24, बुद्धि, अध्याय 7 से 10, बारूक, अध्याय 3 और 4। फिलो की लोगो की समझ और अन्य यहूदी विचारों का उल्लेख न करते हुए, ईश्वर की स्मृति की तरगुमिक धारणा भी इस पाठ को समझने के लिए महत्वपूर्ण होगी। उल्लेखनीय और ज्ञानवर्धक समानताओं के बावजूद, यह स्पष्ट है कि जोहानाइन लोगो इन प्रत्याशित प्रविष्टियों से आगे है।

तो अब विषय का परिचय देने के बाद, हम पेपर के मुख्य भाग के अपने पहले मुख्य भाग की ओर बढ़ते हैं, जो प्रमुख अंतरपाठीय मुद्दों का एक सर्वेक्षण है। एक बाइबिल साक्षर व्यक्ति जो जॉन 1 को पढ़ता है, वह निश्चित रूप से उत्पत्ति 1 की प्रतिध्वनि या संकेतों को नोटिस करेगा। शुरुआत में अधिक स्पष्ट हैं, शब्द के रूप में पहले से मौजूद यीशु का वर्णन, स्वयं सृष्टि का कार्य, शब्द जीवन के रूप में, और समसामयिक शब्द प्रकाश और अंधकार। तो, हम इन श्रेणियों को जिनका हमने अभी उल्लेख किया है, एक-एक करके लेंगे।

सबसे पहले, शुरुआत में वाक्यांश. आमतौर पर यह नोट किया गया है कि जॉन 1:1 उत्पत्ति 1 के आधार पर बनाया गया है और यीशु को, जो देहधारी शब्द है, सृष्टि के एजेंट के रूप में समझता है। इस प्रकार, जॉन 1.1 और 2 की आरंभिक भाषा में, ग्रीक में एन आर्क, सेप्टुआजेंट एन आर्क में उत्पत्ति 1:1 को प्रतिध्वनित करता है जैसा कि जॉन 1 में और हिब्रू में, बेरेशित में।

तो सबसे पहले, वाक्यांश, शुरुआत में, पुराने नियम में, बेरेशित। बेरेशित शब्द, शुरुआत, पुराने नियम में कई अलग-अलग प्रकार की शुरुआत या पहले के संदर्भ में 51 बार आता है, जिसमें उत्पत्ति 10 में निम्रोद का राज्य, व्यवस्थाविवरण 11 में वर्ष की शुरुआत, राजाओं का शासनकाल, यिर्मयाह 26 और शामिल हैं। 27 और 28, पाप की शुरुआत, मीका अध्याय 1, झगड़े की शुरुआत, नीतिवचन 1:7, बुद्धि की शुरुआत, भजन 111, ज्ञान की शुरुआत, नीतिवचन अध्याय 1। ज्येष्ठ पुत्र अपने पिता की पुरुष शक्ति की शुरुआत हैं, उत्पत्ति 49 और अन्य पुराने नियम के ग्रंथों के अनुसार। निर्गमन 34 और अन्य परिच्छेदों के अनुसार, फसलों का पहला फल फसल की शुरुआत है।

लाक्षणिक रूप से, इज़राइल पहला है, ग्रीक में आर्क, भगवान की फसल का, यिर्मयाह अध्याय 2, श्लोक 3, और अन्य ग्रंथ। एली को प्रसाद के पसंदीदा हिस्से का उपभोग करने के लिए निंदा की गई थी, वह पहला हिस्सा होगा। व्यवस्थाविवरण 33, श्लोक 21 की तुलना में, यहजेकेल 48 में लेवियों का आवंटन भूमि का पहला या पसंदीदा हिस्सा है।

नीतिवचन अध्याय 4, श्लोक 7 के अनुसार, बुद्धि जीवन का मूल, पहला, प्रमुख या प्रमुख कार्य है। और नीतिवचन अध्याय 1, श्लोक 7 में, निस्संदेह, प्रभु का भय बुद्धि की शुरुआत है। नीतिवचन 9, श्लोक 10, और भजन 111, श्लोक 10। उत्पत्ति 1:1 में, शुरुआत शब्द, हिब्रू में और ग्रीक में

सेप्टुआजेंट आर्क में, दुनिया की शुरुआत को संदर्भित करता है क्योंकि भगवान ने इसे बनाया था। नीतिवचन 8:22 एक और उदाहरण है जहां ये दो शब्द दुनिया की शुरुआत को संदर्भित करते हैं, हिब्रू में रेशिट , सेप्टुआजेंट में आर्क, ग्रीक अनुवाद।

इस पाठ पर बाद में और अधिक विस्तार से विचार किया जाएगा क्योंकि जॉन 1:1 में लागोस की चर्चा में इसका संदर्भ ईश्वर के होक्मा या ज्ञान से संबंधित है। ये दो ग्रंथ दुनिया की निर्मित शुरुआत के लिए पुराने नियम में रीशिट का एकमात्र निर्विवाद उपयोग हैं , हालांकि यह अर्थ भी प्रशंसनीय है, कम से कम यशायाह 46, श्लोक 10 में। अब हम नए नियम की शुरुआत में आते हैं। नए टेस्टामेंट में शुरुआत से आर्क शब्द की 55 घटनाएं अस्थायी या सरकारी प्राथमिकता से संबंधित कई बारीकियों को दर्शाती हैं।

पॉल टाइटस 3:1 में मानव शासकों के लिए इस शब्द का उपयोग करता है, लेकिन अधिक बार रोमियों 8:38 और इफिसियों 1, कुलुस्सियों 1 सहित कई ग्रंथों में पदानुक्रमित देवदूत अधिकारियों का वर्णन करने के लिए। आर्क आमतौर पर एक कार्रवाई की अस्थायी शुरुआत को संदर्भित करता है, एक प्रक्रिया, या होने की अवस्था। यीशु मसीह के सुसमाचार की शुरुआत के लिए मार्क 1:1 में इसके उपयोग की बहुत चर्चा की गई है। सुसमाचार के शुरुआती दिनों का वर्णन करने के लिए अक्सर आर्क का उपयोग किया जाता है।

ल्यूक 1:2, यूहन्ना 8:25, और 15:27 जैसे पाठ। मत्ती 19:4 में, यीशु मनुष्य के नर और मादा के रूप में सृजन के बारे में बात करते हैं जो शुरुआत से ही घटित हुआ। मैथ्यू 24:21 में, यीशु युगांत संबंधी परेशानियों के बारे में बात करते हैं जो दुनिया के शुरू होने के बाद से, या दुनिया के निर्माण के बाद से कभी नहीं हुई हैं, ग्रीक में एपी' आर्क्स कोस्मौ । जॉन 8:44 में, यीशु शुरू से ही शैतान को एक हत्यारे के रूप में बोलते हैं।

इब्रानियों 1:10 में भजन 102, श्लोक 25, ईसाई रूप से, यीशु द्वारा दुनिया की नींव रखने के वर्णन के रूप में, कथा ' अर्कस , शुरुआत के अनुसार या शुरुआत में पढ़ा जाता है। 2 पतरस 3:4 संशयवादियों के बारे में बात करता है जो मानते हैं कि हर चीज़ तब से जारी है, जब से वह बनी है, सृष्टि के आरंभ से या सृष्टि की शुरुआत से, एपी' आर्क्स केटिसियोस । यहूदा 6 स्पष्ट रूप से उन स्वर्गदूतों की निर्मित स्थितियों का वर्णन करता है जिन्होंने बाद में अपने पहले राज्य या अपनी शुरुआत को छोड़कर विद्रोह किया।

जूड 6. आर्चे ने कम से कम दो महत्वपूर्ण अनुच्छेदों, कुलुस्सियों 1:18 और प्रकाशितवाक्य 3:14 में भी यीशु का वर्णन किया है। कुलुस्सियों 1:18 भविष्यवाणियों की एक श्रृंखला का हिस्सा है जिसमें यीशु को ईश्वर के प्रिय पुत्र के रूप में महिमामंडित किया गया है जो अपने लोगों की रक्षा करता है, जो ईश्वर की छवि भी बनाता है, सब कुछ बनाता है और एक साथ रखता है, और चर्च का नेतृत्व करता है। इस संबंध में, यीशु आदर्श हैं, शुरुआत हैं, जिनके माध्यम से सभी रचनात्मक और मुक्तिदायक प्रक्रियाएं शुरू होती हैं। इसी तरह, प्रकाशितवाक्य 3:14 में, ईश्वर की रचना की शुरुआत के रूप में, यीशु को ईश्वर की रचना के मूल कारण के रूप में वर्णित किया गया है, शायद यीशु को ईश्वर की नई रचना के शुरुआती कारण के साथ-साथ मूल के रूप में भी जोर दिया गया है। निर्माण।

यहां एक अन्य प्रमुख अंतरपाठीय शब्द शब्द या भगवान के भाषण का विचार होगा। तो, यह हमारा दूसरा कार्यकाल है। जॉन 1 में शब्द, ओ लोगो, छह दिनों में से प्रत्येक की शुरुआत में शब्द द्वारा भगवान की रचना का संकेत देता है।

उत्पत्ति 1:3, 6, 9, 14, 20, और 24। पुराने नियम के सेप्टुआजेंट ग्रीक अनुवाद में, काई इपेन हो थियोस जेनेथेटो, और भगवान ने कहा कि रहने दो। या हिब्रू में, वायोमेर एलोहिम हाँ . भगवान ने कहा, रहने दो।

इस प्रकार की भाषण भाषा दिन तीन, दिन पांच, दिन छह के संदर्भ में और अध्याय दो, श्लोक 18 में भी दोहराई जाती है। इस अंतिम पाठ में, भगवान की महिला की रचना उनके भाषण का अनुसरण करती है, काई eipen क्रेओस हा थियोस, सेप्टुआजेंट, और भगवान ने कहा, वायोमेर अडोनाई इब्रानी भाषा में एलोहीम, और परमेश्वर ने कहा, मनुष्य का अकेला रहना अच्छा नहीं। भगवान के भाषण का एक अतिरिक्त संदर्भ अध्याय एक, श्लोक पांच में मिलता है, जब पहले दिन भगवान ग्रीक क्रिया कालेओ का उपयोग करते हुए, हिब्रू में, अकारा को बुलाते हैं, वह उजाले को दिन और अंधेरे को रात कहते हैं।

दूसरे और तीसरे दिन निर्मित इकाइयों के लिए एक ही भाषा का उपयोग किया जाता है। बाद में, एडम अध्याय एक, श्लोक 19 में जानवरों के नाम बताता है। वह श्लोक 23 में महिला का नाम लेता है, और फिर अध्याय तीन, श्लोक 20 में ईव का नाम लेता है।

भगवान भी चौथे दिन अपने प्राणियों और मनुष्यों पर ग्रीक शब्द यूलोगैसिन का उपयोग करके आशीर्वाद देते हैं। इसलिए, हमारे पास वहां भगवान के भाषण के लिए कई अलग-अलग शब्द हैं। पुराने नियम में, भगवान के शब्द को मौखिक संबंधों से परे कई प्रासंगिक ग्रंथों में बोला गया है जो सीधे लोगो और जॉन के बीच खींचे जा सकते हैं और भगवान के भाषण की भाषा उत्पत्ति 1 में कार्य करती है। उदाहरण के लिए, शब्द द्वारा सृजन पर भजन 33 में जोर दिया गया है, छंद छह और नौ.

33.6 में, भगवान का शब्द और सांस समान रूप से सृजन के समानांतर एजेंट हैं। 33.9 में, सृष्टि के तात्कालिक कारणों के रूप में ईश्वर की वाणी और ईश्वर के आदेश के बीच समानार्थी रूप से समानांतर संबंध है। बार-बार, प्रभु का वचन, डेबर अडोनाई, भविष्यवक्ताओं के लिए एक रहस्योद्घाटन के रूप में आता है, जो इसराइल पर न्याय की चेतावनी या मुक्ति का वादा करता है।

भजन 107, श्लोक 20, यिर्मयाह अध्याय एक, श्लोक चार, यशायाह अध्याय नौ, श्लोक आठ, यहजेकेल 33:7, और आमोस 3:1 जैसे पाठ। परमेश्वर का वचन भी विशिष्ट रूप से इज़राइल के मामलों को नियंत्रित करता है। भजन 107, श्लोक 20, भजन 147, श्लोक 15 से 20 तक। शायद अधिक दिलचस्प बात यह है कि यशायाह 55, 10, और 11, एक पाठ जो कभी-कभी जॉन 1 के संबंध में उद्धृत किया जाता है, भगवान के शब्द को भगवान के एजेंट के रूप में चित्रित करता है, जो बिना किसी असफलता के सब कुछ पूरा करेगा। वह इसे पूरा करने का इरादा रखता है।

ईश्वर के निषेध, ईश्वर के शब्द, और ईश्वर के टोरा, उनके कानून और ईश्वर के होक्मा, उनके ज्ञान के अर्थ संबंधी ओवरलैप और धार्मिक निरंतरता को समझना मुश्किल नहीं है। दूसरे मंदिर साहित्य और बाद की रब्बी परंपरा ने नीतिवचन 3.19 और नीतिवचन 8.22-31 जैसे बाइबिल ग्रंथों पर इस निरंतरता और प्रतिबिंब का बहुत अधिक योगदान दिया। ऐसे ग्रंथ ज्ञान की प्रशंसा करते हैं क्योंकि वह सृष्टि से पहले विद्यमान था और ईश्वर के साथ घनिष्ठ संबंध रखता था और सृष्टि में उसकी सक्रिय भूमिका थी। फिर भी नीतिवचन 8.23 के अनुसार बुद्धि स्वयं स्थापित की गई थी। सेप्टुआजेंट में ग्रीक शब्द एथेलेमियोसिन है, ईश्वर ने नींव रखी, ईश्वर ने ज्ञान की स्थापना की, और हिब्रू में भी इसी तरह का शब्द है।

बुद्धि को भी सामने लाया जाता है, जन्म दिया जाता है, नीतिवचन 8:25, जाहिर तौर पर भगवान की पहली रचना के रूप में। इस संबंध में, जॉन में लोगो, जिसने सब कुछ बनाया, न कि केवल बाकी सब कुछ, फिर से जॉन 1:3 में वाक्यांशविज्ञान की ओर इशारा करते हुए, पेंटा डीलतु एजेनाटा, सब कुछ उसके माध्यम से हुआ, कार्ड कोरिस ऑटोउ एजेनेटो उउड हेन, उसके अलावा कुछ भी नहीं हुआ, कुछ भी नहीं बनाया गया। यह ईश्वर के रचनात्मक एजेंट के रूप में व्यक्तिगत ज्ञान के सिद्धांत से बहुत आगे है।

नए नियम की ओर लौटते हुए, नए नियम में लोगो का उपयोग विभिन्न प्रकार के दैवीय या मानवीय संचार या हिसाब-किताब के लिए किया जाता है, चाहे वह मौखिक कथन, शिक्षाएं, वादे या लिखित संदेश हों। संभवतः पहले से मौजूद यीशु के लिए जोहानिन द्वारा लोगो का उपयोग 1 जॉन 1:1 और प्रकाशितवाक्य 19:13 में भी पाया जाता है। इसके अलावा, 1 यूहन्ना 5:7 में एक प्रारंभिक संस्करण पिता और आत्मा को शब्द के साथ जोड़ता है, यह सुझाव नहीं देता है कि यह मूल पांडुलिपियों में एक विहित पाठ है, शब्द के रूप में यीशु की इस समझ के लिए बस एक दिलचस्प प्रारंभिक संकेत है। गतिशील रूप से सक्रिय अर्ध-व्यक्तिकृत हा लोगो तू इब्रानियों 4:12 में, अर्थात् परमेश्वर का वचन जो जीवित और सक्रिय है और मानव हृदयों में प्रवेश करता है, इस बातचीत और चर्चा के लिए भी प्रासंगिक हो सकता है।

यशायाह 40:8 और 1 पतरस 1:25 का संकेत, जो परमेश्वर के वचन की अनंत शक्ति पर जोर देता है, भी प्रासंगिक और दिलचस्प है। जॉन 1:1 में, ईश्वर की आत्म-अभिव्यक्ति के पूर्ववर्ती और अंतिम मानवीकरण के रूप में हो लोगो ईश्वर के संचारी शब्द के सभी पिछले संदर्भों को पार करता है। इब्रानियों 1:1 और 2 की तुलना करें। जैसा कि चौथे सुसमाचार में विकसित किया गया है, शब्द मांस बन जाता है, एक्सजेगेट्स, ग्रीक शब्द एक्सजेसैटो, प्रकट करता है, पिता को इतनी पर्याप्त रूप से समझाता है कि जिसने 14:8 और 9 के अनुसार यीशु को देखा है उसने देखा है पिता।

यीशु स्वर्ग से उतरा है, यूहन्ना 3:14, और अध्याय 5 श्लोक 16-19 के अनुसार सब्त के दिन भी पिता का कार्य करता है। मूसा ने यीशु के बारे में लिखा और यीशु के शब्दों को जॉन 5:45-47 में परमेश्वर के नियम के रूप में मूसा के शब्दों के साथ रखा गया है, लेकिन यीशु शब्द इब्राहीम के जन्म से भी पहले अस्तित्व में था और इब्राहीम यीशु के दिन को देखकर खुश हुआ क्योंकि शब्द देह बन गया। यूहन्ना 8 श्लोक 56-58. जैसे ही वह शब्द देहधारी हुआ जिसे संसार की उत्पत्ति से

पहले पिता ने प्रेम किया था, यीशु पिता के पास अपनी वापसी की आशा करता है और उन लोगों के लिए प्रार्थना करता है जिन्होंने उसका अनुसरण किया है।

वह उनका वर्णन ऐसे लोगों के रूप में करता है जिन्हें परमेश्वर का वचन दिया गया है, जिन्होंने इसे रखा है, और जिन्हें इसकी पवित्र करने वाली शक्ति की आवश्यकता है, यूहन्ना 17:6, 14, और 17। यूहन्ना जैसे आध्यात्मिक सुसमाचार को शब्द के देह बनने के रूप में भी वर्णित किया जा सकता है। ये सन्दर्भ यीशु के शब्दों का भी उल्लेख करते हैं क्योंकि शब्द देह बन जाता है।

किसी भी घटना में, पुनरुत्थान के बाद यीशु की उपस्थिति एक संदेहकर्ता को इस निष्कर्ष पर ले जाती है कि देहधारी शब्द स्वयं प्रभु और ईश्वर है, अर्थात् जॉन 20.28 में थॉमस। लोगो से सृजन के कार्य की ओर आगे बढ़ते हुए। यूहन्ना 1:3, पन्त में सृष्टि के कार्य का वर्णन देई ऑटोउ एजेनेटो, सब कुछ उसके द्वारा बनाया या घटित हुआ, संभवतः उत्पत्ति 1:1 की ओर संकेत करता है। इसके सेप्टुआजेंट अनुवाद में, यह पढ़ता है, इपोइसेन हो थियोस टू ऑरानोन, भगवान ने स्वर्ग और पृथ्वी बनाई, हिब्रू बाइबिल में एक समान अभिव्यक्ति। यूहन्ना 1:3 में, एजेनेथेटो सेप्टुआजेंट की 1, 2, और 3 दिनों की भाषा को प्रतिध्वनित करता है। शब्द जेनेथेटो, लेट देयर बी, या थेटोसन, लेट देयर बी रखा गया है, अध्याय 1, छंद 3, 6, और 14, और उत्पत्ति 1 :3, एजेनेथेटो की हल्की भाषा थी फॉस .

परमेश्वर द्वारा आदम और हव्वा की रचना के अतिरिक्त संदर्भ उत्पत्ति 1:26, 27, 31, साथ ही अध्याय 5:1-2 और अध्याय 6:7 में मिलते हैं। तो, पहले आइए पुराने नियम में सृष्टि के कार्य के बारे में सोचें। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, दुनिया की मूल रचना के लिए हिब्रू शब्द बारा का उपयोग उत्पत्ति 1 में कई बार किया गया है। बारा का उपयोग अन्य ग्रंथों में बाद के व्यक्तियों, स्थितियों और परिस्थितियों के निर्माण का वर्णन करने के लिए भी किया जाता है।

कुल मिलाकर, यह शब्द हिब्रू बाइबिल में 54 बार आता है। इस अध्ययन में विशेष रुचि व्यक्तियों के परिवर्तन से संबंधित संदर्भों में बारा का उपयोग है, जैसे कि भजन 51, श्लोक 7, और स्वयं सृष्टि, यशायाह 4, श्लोक 5, 41:20, 45:8, और 65। :17, और 18. यशायाह 43, श्लोक 1, श्लोक 7 और श्लोक 15 के अनुसार, बाद के पाठ में नए आकाश और नई पृथ्वी की इस रचना में इज़राइल की भविष्य की रचना भी शामिल है।

हिब्रू बाइबिल में भगवान की रचनात्मक गतिविधि का वर्णन करने के लिए एक और शब्द का उपयोग किया जाता है, अर्थात् शब्द आसा। यह अत्यंत सामान्य शब्द, हिब्रू बाइबिल में 2,500 से अधिक बार, कई प्रकार के निर्माण और कार्य का वर्णन करता है। उत्पत्ति 1:7, 11, 12, 16, 25, और 26 में, असः प्रारंभिक दिव्य भाषण कृत्यों के बाद आता है, वायोमेर एलोहिम, और भगवान ने कहा, उसके बाद भगवान ने यह किया, भगवान ने वह बनाया।

यह 2, 3, 4, और 6 दिन पर होता है। कई अन्य बाइबिल ग्रंथों में ईश्वर की गतिविधि के संदर्भ में, या तो मूल रचना या ईश्वर की चल रही संभावित गतिविधि के संदर्भ में, आसाह शब्द का उपयोग किया जाता है। आसाह में व्यवस्थाविवरण 26, श्लोक 9, 32:6, यशायाह 17:7 जैसे ग्रंथों और अतिरिक्त ग्रंथों में भी ईश्वर द्वारा इस्राएल बनाने का उल्लेख है। यह यहजेकेल 18:31 के मामले में

ईश्वर द्वारा व्यक्तिगत परिवर्तन करने को भी संदर्भित करता है।

शायद जॉन 1 के लिए उत्पत्ति 1 का सबसे प्रासंगिक पहलू अस्तित्व की ओर ले जाने वाले भाषण के भाषा अनुक्रम की व्यापकता है।

छह बार भगवान बोलते हैं, वायोमेर एलोहिम , येही या, आदि, भगवान ने कहा कि प्रकाश हो, सेप्टुआजेना इपेन हो थियोस ... एजेनेटो फॉस . हर बार अस्तित्व ईश्वर की इसी वाणी से उत्पन्न होता है। हिब्रू में भगवान के येही या कहने के बाद, पाठ कहता है वायेही या।

भगवान ने कहा, प्रकाश हो और प्रकाश हो गया। ग्रीक में, सेप्टुआजेंट में, भगवान कहते हैं, एजेनेटो टैथोस , और फिर हमारे पास कोई एगेनाटो है थियोस , यह हुआ. संक्रमण जो पहले पांच दिनों के अंत का प्रतीक है, अस्तित्व की भाषा को दोहराता है और इसे और अधिक उल्लेखनीय बनाता है, अध्याय 1, छंद 5, 8, 13, 19, और 23।

अब हम नए नियम में सृजन के कार्य को देखते हैं। नए नियम में, पोइओ शब्द , जो आमतौर पर हिब्रू में बराह और आसाह दोनों का अनुवाद करने के लिए सेप्टुआजेंट में उपयोग किया जाता है , का उपयोग सृजन के लिए भी किया जाता है। यह अक्सर नए नियम के ग्रंथों में होता है जो पुराने नियम का हवाला देते हैं, जैसे मैथ्यू अध्याय 19, श्लोक 4, और इसी तरह के ग्रंथ।

सृष्टि के लिए नए नियम में एक और सामान्य शब्द है Ktidzo । यह शब्द गलाटियंस अध्याय 6, श्लोक 15 जैसे ग्रंथों में नई रचना के रूप में मुक्ति के नए नियम के धर्मशास्त्र के लिए महत्वपूर्ण है, जो 2 कुरिन्थियों 5:17 में क्रिया केटिसिस के संज्ञा रूप की तुलना करता है। इफिसियों 2:10, इफिसियों 2:15, 4:24, और कुलुस्सियों 3:10 में भी। हालाँकि, केटिसिस का उपयोग करने वाली इस शब्दावली का उपयोग गॉस्पेल या जॉन के पत्रों में नहीं किया गया है।

इस अध्ययन के प्रयोजन के लिए, भगवान की रचनात्मक गतिविधि का वर्णन करने के लिए जॉन 1:3 और 1:10 में जिनोमाई का उपयोग सबसे अधिक प्रासंगिक है। सृजन के लिए जिनोमई का उपयोग नए नियम में लगभग अनोखा प्रतीत होता है और रचनात्मक कृत्य का वर्णन करने के लिए उत्पत्ति 1:1 में हिब्रू में हया , जिनोमई , हिब्रू में हया , सेप्टुआजेंट में जिनोमई के लगातार उपयोग का संकेत दिया गया है। इस संबंध में, जॉन 1:1 की तुलना जॉन 8:58 से करना दिलचस्प है, जहां यीशु के पूर्व-अस्तित्व की तुलना अब्राहम की पिछली उत्पत्ति से की गई है।

प्रिंस अब्राम जेनेस्थाई , इब्राहीम के जन्म से पहले, इब्राहीम के जन्म से पहले, अहंकार ईमी , मैं हूं। जॉन 1 और उत्पत्ति 1 में पुराने और नए नियम के बीच अंतर्पाठ्यता का एक और विशिष्ट पहलू जीवन शब्द का संकेत है। अध्याय 1, पद 3, एन ऑटो ज़ो में जॉन द्वारा जीवन के स्रोत के रूप में यीशु का उल्लेख hi , उसमें जीवन था, यह स्वयं उत्पत्ति 1 का संकेत है, जहां निस्संदेह जीवन केंद्रीय है।

उत्पत्ति 1:20 और 21 में, ईश्वर ने जल में रहने वाले प्राणियों, आकाश के पक्षियों और अन्य जलीय प्राणियों को बनाया, सभी को जीवित प्राणियों के रूप में वर्णित किया गया है । ग्रीक में ज़ोसोन , और हिब्रू में नेफ़ेश हेया । अध्याय 1, श्लोक 24 में मवेशियों और अन्य भूमि प्राणियों के लिए इसी

भाषा का उपयोग किया गया है। अध्याय 1, श्लोक 28 में, मनुष्यों के लिए प्रत्येक जीवित वस्तु पर शासन करने की ईश्वर की योजना का वर्णन किया गया है।

अध्याय 1, श्लोक 30 में, ईश्वर प्रत्येक जीवित प्राणी के भोजन के लिए हरे पौधे देता है। पुनः नेफेश हेया शब्द का प्रयोग किया गया है। मनुष्य स्वयं जीवन की सांस प्राप्त करते हैं, जॉन अध्याय 20, पद 22 की तुलना करें, और वे उत्पत्ति अध्याय 2, पद 7 में जीवित प्राणी बन जाते हैं। तो, आइए इस बारे में सोचें कि पुराने नियम में जीवन का उपयोग कैसे किया जाता है।

कई पुराने नियम ग्रंथों में, जैसे कि भजन 89, श्लोक 47, और भजन 90, श्लोक 10 में, जीवन के बारे में केवल भौतिक अर्थ में बात की गई है। लेकिन कई अन्य ग्रंथ इज़राइल के ईश्वर को जीवित ईश्वर के रूप में चित्रित करते हैं। व्यवस्थाविवरण 5:26, यहोशू 3:10, 1 शमूएल 17:26, और अतिरिक्त अंश।

यह जीवित परमेश्वर इस्राएल को उसके साथ अनुबंधित संबंध में जीवन जीने के लिए कहता है, व्यवस्थाविवरण अध्याय 4, पद 10; 12:1, और व्यवस्थाविवरण 31:13. इस वाचा के संदर्भ में, ईश्वर इस्राएल को जीवन और समृद्धि का आशीर्वाद देता है यदि वे उसकी आज्ञा मानते हैं, और वह उन्हें मृत्यु और विपत्ति के अभिशाप की चेतावनी देता है यदि वे उसकी अवज्ञा करते हैं, व्यवस्थाविवरण 31, श्लोक 15 से 20 तक। जीवन, तो, बस नहीं है यह वर्षों की अवधि का मामला है जिसके दौरान एक व्यक्ति रहता है, लेकिन जीवन एक गुणात्मक और संबंधपरक मामला भी है। व्यवस्थाविवरण अध्याय 8, श्लोक 3 के अनुसार, इज़राइल केवल रोटी से नहीं, बल्कि ईश्वर के मुख से निकलने वाली हर चीज़ से जीवित रहता है। ईश्वर इज़राइल को एक आंतरिक परिवर्तन, हृदय का खतना प्रदान करता है, जो उन्हें उससे प्यार करने में सक्षम बना सकता है और इस प्रकार उसके लिए जियो, व्यवस्थाविवरण अध्याय 30, पद 6। व्यवस्थाविवरण अध्याय 30, पद 20, और 32, पद 47 के अनुसार, इस्राएल के लिए परमेश्वर का वाचा का वचन इस्राएल के जीवन से कम नहीं है।

नीतिवचन अध्याय 8, श्लोक 35 और नीतिवचन के कई अन्य ग्रंथों के अनुसार, जो ज्ञान पाता है वह जीवन पाता है। इस संबंध में, ईश्वर इस्राएल के जीवन का स्रोत है, जिसके प्रकाश में वे प्रकाश देखते हैं, भजन 36, पद 9, उत्पत्ति 2:10, यिर्मयाह 2:13 की तुलना में। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह भौतिक सांसारिक जीवन को संदर्भित करता है, लेकिन यह भौतिक सांसारिक जीवन है जो भगवान के साथ सही संबंध में जीया जाता है। अब हम नए नियम में जीवन की ओर मुड़ते हैं।

पुराने नियम की तरह, नए नियम के कई ग्रंथ सरल भौतिक जीवन की बात करते हैं, अधिनियम 17:25। 20, पद 10, याकूब 4:14। कई अन्य ग्रंथ मसीह में ईश्वर द्वारा संभव बनाए गए एक उत्कृष्ट प्रकार के जीवन की बात करते हैं, अधिनियम 11:18, 13:48, रोमियों 6:4। 2 कुरिन्थियों 2:15 और 16 और इफिसियों 4:18 के अनुसार, जो लोग मसीह में परमेश्वर से संबंधित नहीं हैं, वे परमेश्वर के जीवन से अलग हो गए हैं। मसीह में जीवन संभव है क्योंकि भगवान ने उसे मृतकों में से जीवित किया और विश्वासियों के पास आत्मा भेजा, अधिनियम 3:15, रोमियों 6:8 और निम्नलिखित और अन्य पाठ। इस प्रकार का जीवन अनन्त है क्योंकि इसमें आने वाले संसार के लिए प्रतिज्ञा है, मत्ती 19:16। जोहानाइन ग्रंथ भी जीवन के क्षणों में केवल भौतिक अर्थों में बात

करते हैं। यूहन्ना अध्याय 10, श्लोक 11, 10:15, 17, यूहन्ना 12:25, और अन्य जैसे ग्रंथ केवल भौतिक या भौतिक जीवन की बात करते प्रतीत होते हैं।

लेकिन यह स्पष्ट है कि जॉन द्वारा इस प्रकार की भाषा का उपयोग ईश्वर के साथ संबंध में जीए जाने वाले गुणात्मक रूप से भिन्न प्रकार के जीवन और अंत तक बने रहने से कहीं अधिक है। यह शाश्वत जीवन विश्वासियों का एक वर्तमान अनुभव है, लेकिन इसकी तुलना पहले से ही मृतकों में से जी उठने से की जा सकती है, जॉन अध्याय 5:21 और छंद 24 और 25। यीशु के तीन कथन, अहंकार ईमी, जीवन से संबंधित हैं।

वह जीवन की रोटी है जो स्वर्ग से उतरती है, 6:41, 48, और 51। वह जीवन में पुनरुत्थान है, यूहन्ना 11:25। वह मार्ग, सत्य और जीवन है, यूहन्ना 14:6। शायद जॉन अध्याय 1, छंद 4 और 5 के सापेक्ष जॉन में सबसे महत्वपूर्ण पाठ, और इस प्रकार उत्पत्ति अध्याय 1 को देखते हुए, जॉन अध्याय 8, श्लोक 12 है, जो जीवन और प्रकाश को विपरीत क्रम में प्रस्तुत करता है। यूहन्ना 1:4 में, यीशु जीवन को जीवंत बनाता है और इस प्रकार लोगों को प्रबुद्ध करता है।

8:12 में, यीशु संसार की ज्योति के रूप में उन लोगों को जीवन प्रदान करता है जो उसका अनुसरण करते हैं। 1 जॉन अध्याय 1, श्लोक 1 से 7 में, जीवन और प्रकाश का अंधकार और पाप के साथ एक संबंध भी है जो जीवन और प्रकाश के साथ असंगत है जो कि जॉन अध्याय 1, श्लोक 4 और 5 के सुसमाचार के तुलनीय या समान है। और यूहन्ना 8:12 तक। जॉन 1 और उत्पत्ति 1 के बीच अंतर्पाठीयता का एक अन्य विषय प्रकाश और अंधेरे का विचार है। जॉन के लिए, जीवन के रूप में शब्द को प्रकाश के रूप में शब्द द्वारा दर्शाया गया है, अध्याय 1, पद 4। काई हे ज़ो एन टू फॉस टन एंथ्रोपोन, जीवन था मानव का प्रकाश।

जॉन अध्याय 1, श्लोक 5 में प्रकाश और अंधकार का संदर्भ, प्रकाश अंधकार में चमकता है, उत्पत्ति अध्याय 1, श्लोक 2 और 3 की ओर संकेत करता है, जो सेप्टुआजेंट में कहता है, काई स्काटोस इपोनोट्स अबुसु, काई ईपेन हा थियोस जेनेथीटो फॉस, काई एगेनेथो फॉस. दूसरे शब्दों में, अथाह अथाह स्थान पर अंधेरा था, और भगवान ने कहा, वहाँ प्रकाश हो, और इसलिए वहाँ प्रकाश था। इसलिए, जब हम हिब्रू बाइबिल की उत्पत्ति 1, श्लोक 3 से 5 में प्रकाश और अंधकार को देखते हैं, तो हमारे पास अध्याय 1, श्लोक 2 के अंधेरे की जगह, प्रकाश के निर्माण के रूप में पहले दिन के रचनात्मक कार्य का वर्णन होता है। और शाम और सुबह का क्रम शुरू होता है जो अध्याय 1, श्लोक 15 से 18 में पहले पांच दिनों में से प्रत्येक को चिह्नित करता है।

बाइबिल के अन्य ग्रंथ प्रकाश को ईश्वर द्वारा दुनिया की रचना करने और बनाए रखने के साथ जोड़ते हैं, अय्यूब 38:19, भजन 74, श्लोक 16 और 17, साथ ही भजन 104, श्लोक 2। इज़राइल के लिए ईश्वर की देखभाल अक्सर प्रकाश देने के माध्यम से व्यक्त की जाती है। निर्गमन अध्याय 10, श्लोक 23 के अनुसार, मिस्र पर अंतिम विपत्ति अंधकार थी, जबकि अकेले इस्राएलियों के पास प्रकाश था। परमेश्वर ने बादल और आग के खंभों के साथ दिन और रात जंगल में इस्राएलियों का नेतृत्व किया, निर्गमन 13:21, 14: 20, और अन्य पाठ जो उन घटनाओं का संदर्भ देते हैं।

तम्बू के फर्नीचर में मेनोराह और प्रकाश के लिए मोमबत्ती शामिल थी। अय्यूब में, अय्यूब 12, पद 22, पद 25, अय्यूब 30, पद 26, और 38:15 जैसे ग्रंथों में प्रकाश कठिन मामलों के लिए ईश्वर प्रदत्त समझ का एक रूपक है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह अय्यूब अध्याय 26 और श्लोक 10 में ईश्वर की व्यवस्था का भी उल्लेख करता है। भविष्यवक्ताओं, स्तोत्र, नीतिवचन और सभोपदेशक में, प्रकाश और अंधकार अक्सर अच्छे और बुरे, समृद्धि और प्रतिकूलता, आशीर्वाद और न्याय के रूपक हैं, और हम जीत गए। इसके लिए पाठ उद्धृत करने के विवरण में मत जाइए।

यदि आपकी रुचि हो तो आप उन्हें पा सकते हैं। हम नए नियम में प्रकाश और अंधकार की ओर मुड़ते हैं। न्यू टेस्टामेंट में भी प्रकाश और अंधकार का अक्सर रूपक के रूप में उपयोग किया जाता है।

सिनोटिक गॉस्पेल में, यीशु की शिक्षा उनके अनुयायियों को प्रबुद्ध करती है, मैथ्यू 4:16, यशायाह 9:2 का हवाला देते हुए। इसके अलावा, मैथ्यू 5:14-16, मैथ्यू 6:22-23, ल्यूक 2:32, यशायाह 42:6 और 49:6 की ओर संकेत करते हैं, जैसा कि प्रेरितों के काम 13:47 में है। प्रेरितों के काम 26:18 में, पॉल ने अपने मंत्रालय को ऐसे मंत्रालय के रूप में प्रस्तुत किया है जो लोगों को अंधेरे से प्रकाश की ओर, शैतान से भगवान की ओर बदलता है, और नए नियम और पहले नौ पत्रों में अक्सर समान कल्पना होती है। यहां तक कि पतरस भी 1 पतरस 2:9 में इस कल्पना का उपयोग करता है। जॉन 1:4-5 में प्रकाश और अंधेरे का अर्थ होगोनेन पर प्रसिद्ध विराम चिह्न असहमति से जटिल है और ऐसा हुआ है, जिसे पूर्ववर्ती या निम्नलिखित के साथ पढ़ा जा सकता है, एक सापेक्ष खंड के रूप में जो मुर्गी का वर्णन करता है अध्याय 1 का अंत, श्लोक 3। तो, हम इसे पढ़ सकते हैं, कार्ड कोरेई ऑटोउ egento फिर भी, उसके बिना कुछ भी नहीं बनाया गया था जो बनाया गया है, जैसा कि एनआईवी करता है। या हम इसे एन ऑटो के रूप में पढ़ सकते हैं, अध्याय 1, श्लोक 4, हे- गोगोनेन की शुरुआत में लिंगिंग क्रिया एन के विषय के रूप में। एन ऑटो जो हेइन, जो उसमें घटित हुआ वह जीवन था, और फिर इसके शेष भाग को निम्नलिखित श्लोक के साथ लें।

उत्पत्ति 1:3 के संकेत की निश्चितता इस बहस से प्रभावित नहीं होती है, हालाँकि संकेत की बारीकियाँ प्रभावित होती हैं। पूर्व दृष्टिकोण में, पाठ को पढ़ते हुए, उसके बिना कुछ भी नहीं बनाया गया था जो बनाया गया था, शब्द के निर्माण के सार्वभौमिक दायरे पर इस तरह से जोर दिया गया है जो स्पष्ट रूप से उस शब्द को किसी भी चीज़ से अलग करता है जो बनाया गया था। बाद के दृष्टिकोण में, उसके अलावा कुछ भी नहीं बनाया गया था, और जो उसमें हुआ वह जीवन था, श्लोक 4। यह अभी भी स्पष्ट है कि शब्द ने हर एक चीज़ बनाई है, लेकिन उस जीवन पर अधिक जोर दिया गया है जो शब्द के माध्यम से घटित हुआ है शब्द रचना की सार्वभौमिकता।

शायद बाद वाला दृष्टिकोण जॉन में नई रचना के निहितार्थों का अधिक समर्थन करता है, जैसा कि हम इस अध्ययन में बाद में देखेंगे। कुल मिलाकर, निर्णय इस बात पर निर्भर करता है कि हेगोनेन को सृजन से संबंधित माना जाना चाहिए या अवतार से। समग्र रूप से जोहानाइन कॉर्पस 1.1.4.5 में इसके उपयोग के समान ही प्रकाश और अंधेरे का बार-बार उपयोग करता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि जॉन उत्पत्ति 1.3 में पहले रचनात्मक कार्य की कल्पना को यीशु के मिशन के लिए एक केंद्रीय रूपक के रूप में उपयोग करता है।

यह 1:5.5 तक स्पष्ट है, यदि 1:4 में नहीं, तो शब्द को प्रकाश के अवतार के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिसे पतित दुनिया के अंधेरे से समझा या दूर नहीं किया जा सकता है। जॉन द बैपटिस्ट स्वयं प्रकाश नहीं है, लेकिन वह शब्द के माध्यम से पाए जाने वाले प्रामाणिक ज्ञान का गवाह है। यहां से, प्रकाश और अंधेरा नियमित रूप से नैतिक द्वैतवाद रूपकों के रूप में सामने आते हैं, जो अध्याय 3, छंद 19 से 21 तक शुरू होता है, जो प्रकाश को जीवन की ओर ले जाने वाले विश्वास और अंधेरे को अविश्वास के साथ जोड़ता है जो निर्णय की ओर ले जाता है।

जॉन 8:12 में जीवन की वास्तविकता और प्रकाश के रूपक के साथ शब्द का जुड़ाव एक नए सृजन पाठ के रूप में जॉन 1:4-5 की समझ के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। अब जॉन 1 और उत्पत्ति 1 के बीच अंतर्पाठीयता के विवरण के इस अध्ययन से आगे बढ़ते हुए, हम एक संश्लेषण, एक जोहानाइन बाइबिल धर्मशास्त्र का प्रयास करना शुरू करते हैं कि कैसे शब्द, लोगो, सृजन से संबंधित है। सबसे पहले, लोगो और मूल रचना।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि जॉन ने जानबूझकर उत्पत्ति अध्याय 1 के कई संकेतों के साथ अपना सुसमाचार शुरू किया। ऐसा करते हुए, उन्होंने पुष्टि की कि शब्द न केवल सृष्टि के समय विद्यमान है, बल्कि निर्माता भी है। उसके अलावा कुछ भी नहीं बना, और उसके बिना कुछ भी नहीं हुआ, एक भी चीज़ नहीं हुई। यह दोहराव वाला कथन शब्द को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूपों में निर्माता के रूप में प्रस्तुत करता है, जिससे मामले के बारे में कोई संदेह नहीं रह जाता है।

शब्द के अतिरिक्त कुछ भी अस्तित्व में नहीं आया। पूर्वसर्गीय वाक्यांश उसके और क्रोडियस के माध्यम से निपटाए गए अल्टु, उसके अलावा, सृजन के संबंध में शब्द की गतिविधि को व्यक्त करते हैं। यह सब उसके माध्यम से था और इसमें से कुछ भी उसके बिना नहीं था।

इस संदर्भ में, शब्द की व्यक्तिगत एजेंसी को निर्माता के रूप में संदर्भित किया जाता है। यदि सब कुछ शब्द के माध्यम से बनाया गया था जो भगवान के साथ था और जो भगवान था, तो शब्द के माध्यम से कौन भगवान था और कौन भगवान के साथ था सब कुछ बनाया। शब्द की सक्रियता के अतिरिक्त कुछ भी स्वतंत्र रूप से अस्तित्व में नहीं आया।

शब्द कोई निम्न देवता नहीं था जिसे सृजन का कार्य किसी श्रेष्ठ देवता द्वारा सौंपा गया था, न ही शब्द का रचनात्मक कार्य पिता और पवित्र आत्मा से अलग किया गया था। इस प्रकार पाठ स्पष्ट रूप से निर्माता के रूप में शब्द की प्रत्यक्ष भूमिका के बारे में बात करता है, जैसे 1 कुरिन्थियों 8:6, कुलुस्सियों 1:18, और इब्रानियों 1:2 जैसे पाठ करते हैं। हमने मूल रचना में शब्द के बारे में बात की है। अब हम शब्द और सृष्टि के नवीनीकरण के बारे में सोचते हैं।

चौथे सुसमाचार की शानदार प्रस्तावना लोगो, शब्द को न केवल असारकोस निर्माता के रूप में प्रस्तुत करती है, बल्कि ईश्वर के एन्सारकोस प्रकटकर्ता के रूप में भी प्रस्तुत करती है। एसारकोस के रूप में, अर्थात्, अपनी पूर्व-मौजूदा अवस्था में मांस निर्माता के अलावा, यीशु ने

दुनिया का निर्माण किया। एक देहधारी, देहधारी ईश्वर के प्रकटकर्ता के रूप में, यीशु ईश्वर को प्रकट करने आये।

यदि यह स्पष्ट है कि जॉन 1 से 3 तक शब्द को हर चीज के मूल निर्माता के रूप में प्रस्तुत किया गया है, तो यह उतना ही स्पष्ट है कि जॉन 1 छंद 4 और 5 शब्द को इस तरह से प्रकटकर्ता के रूप में प्रस्तुत करता है जो एक अव्यक्त जोहानिन नई रचना धर्मशास्त्र को मान्य करता है। यद्यपि इस बाद वाले बिंदु को अक्सर इंजीलवादियों द्वारा पूर्व के रूप में मान्यता नहीं दी गई है, यानी, इंजीलवादियों ने नियमित रूप से सृजन के नवीनीकरण के सिद्धांत पर ध्यान नहीं दिया है क्योंकि उनके पास इस पाठ में मूल सृजन का सिद्धांत है, का चित्रण जीवन और प्रकाश के रूप में लोगो, सृष्टि के नवीनीकरण के रूप में मुक्ति के जोहानिन धर्मशास्त्र की धारणा को वैध बनाता है। आमतौर पर समझा जाता है कि रोमन 5:12-21, रोमियों 8:18-23, 2 कुरिन्थियों 4:3-7, 2 कुरिन्थियों 5:17 जैसे ग्रंथों में पत्रावली शैली और तर्क में पॉल द्वारा स्पष्ट रूप से संप्रेषित किया गया है। जेनेसिया में पॉल का दिलचस्प उपयोग, मैथ्यू 19.28 में दुनिया का नवीनीकरण। इस प्रकार की शिक्षा चौथे सुसमाचार के लेखक द्वारा भी संप्रेषित की गई है, भले ही वह कथात्मक कलात्मकता के माध्यम से अधिक अंतर्निहित हो, न कि सरल गद्य भाषा में।

टिप्पणियाँ जॉन 1 के विभिन्न विवरणों की रचना के स्वरूप के बारे में अलग-अलग टिप्पणियाँ करती हैं, लेकिन विषय का विस्तारित उपचार अपेक्षाकृत असामान्य है। कुछ टिप्पणियाँ और अध्ययन जॉन 1:19 और उसके बाद में सात दिन पाते हैं, और इन्हें उत्पत्ति 1 में सृष्टि के सात दिनों की प्रतिध्वनि के रूप में देखा जाता है। अन्य अध्ययनों में अध्याय 20 जैसे ग्रंथों में, सुसमाचार में स्वर्ग के रूपांकन पर जोर दिया गया है, जहां मैरी मैग्डलीन का माली ने यह सोचकर स्वागत किया कि यीशु ही माली है, मुझे कहना चाहिए, ईस्टर रविवार की सुबह खाली कब्र पर। कोस्टेनबर्गर का सृजन के स्वरों का सारांश ब्राउन द्वारा किए गए अध्ययन पर निर्भर करता है।

यहां मैं 2009 में जॉर्डेवन द्वारा प्रकाशित एंड्रियास कोस्टेनबर्गर की न्यू टेस्टिमनी ऑफ जॉन्स गॉस्पेल एंड लेटर्स की बात कर रहा हूं, साथ ही 2010 में कैथोलिक बाइबिल क्वार्टरली में जेनाइन ब्राउन के लेख, क्रिएशन्स रिन्यूअल इन द गॉस्पेल ऑफ जॉन की बात कर रहा हूं। कोस्टेनबर्गर का उपचार रूपांकन पर जोर देता है। प्रकाश और जीवन के साथ-साथ प्रस्तावना में भी, लेकिन बुक ऑफ साइन्स, अध्याय 1, छंद 19 से 12:50 तक, और पैशन नैरेटिव में, और यहां तक कि पुनरुत्थान खाते में भी नई रचना धर्मशास्त्र के संक्षिप्त उपचार हैं। प्रोफेसर ब्राउन शुरुआत में, जॉन 1:1 में वाक्यांश पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जॉन में एक रूपांकन के रूप में जीवन पर भी, और जॉन के चरमोत्कर्ष पर, अध्याय 20 और 21, जहां उन्हें उत्पत्ति अध्याय 1 और 2 के लिए कई संकेत मिलते हैं।, वह यीशु के पुनरुत्थान की भी बात करती है, जिसे एक नए सृजन सप्ताह की शुरुआत के रूप में लिया जाता है।

हालांकि ब्राउन अन्यथा तर्क देते हैं, वैध गूँज का निर्धारण करने के लिए हे के मानदंडों का एक कठोर अनुप्रयोग, यानी पुराने नियम और नए की अंतरपाठीय गूँज, इन सुझाए गए संकेतों में से कुछ को बाहर करने में परिणामित हो सकता है। पहली नज़र में उनमें से सभी समान रूप से आश्चर्य नहीं होते हैं। पहली नज़र में, उत्पत्ति 1 और यूहन्ना 1 के बीच समान स्पष्ट कल्पना के बाद, उत्पत्ति 2:7 और यूहन्ना 20:22 का प्रस्तावित संकेत, जहां यीशु शिष्यों पर सांस लेते हैं और उनकी

सांस उनके द्वारा आत्मा के स्वागत में शामिल होती है। उत्पत्ति 2.7 की संभावित स्मृति, यह परिच्छेद में सबसे संभावित और सबसे महत्वपूर्ण अंतर्पाठीय संकेत हो सकता है।

अंत में, उत्पत्ति 1 और जॉन 1 के बीच संबंध पर कुछ निष्कर्ष निकालने के लिए, इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता है कि चौथा सुसमाचार शब्द को उत्पत्ति 1 में अस्तित्व में आई हर चीज के निर्माता के रूप में चित्रित करता है। यह जॉन में कई संकेतों द्वारा दिखाया गया है 1 से उत्पत्ति 1 तक जिसका सर्वेक्षण ऊपर किया गया है। शब्द की प्रत्यक्ष एजेंसी और रचना से ऐसे किसी भी व्यक्ति को काफी विराम लगना चाहिए जो उत्पत्ति के ईसाई सिद्धांत का प्रस्ताव करता है जो एक अवैयक्तिक या यांत्रिक प्रक्रिया प्रस्तुत करता है जो शब्द की एजेंसी को कम कर देता है। जैसा भी हो, जॉन 1 उत्पत्ति के किसी भी मौजूदा सिद्धांत के लिए तर्क प्रदान करने के लिए उत्पत्ति 1 का उल्लेख नहीं करता है।

जॉन 1 में उत्पत्ति 1 का हवाला इस बहस के लिए नहीं दिया गया है कि ईश्वर को दुनिया बनाने में कितना समय लगा। बल्कि, जॉन 1 मौलिक सेटिंग प्रदान करने के लिए उत्पत्ति 1 की ओर संकेत करता है जिससे चौथे सुसमाचार को समझा जाना चाहिए, जो यीशु की कहानी को उसकी प्राचीन जड़ों तक ले जाता है। जॉन की कथा में चित्रित प्रकाश और अंधेरे के नैतिक द्वैतवाद को उत्पत्ति 1 और 2 के सृजन वृत्तांत के अलावा पूरी तरह से नहीं समझा जा सकता है। जिस तरह उत्पत्ति 1:3 के अनुसार मूल दुनिया के अंधेरे को भगवान के वचन द्वारा प्रकाशित किया गया था, चलो वहाँ प्रकाश हो, इसलिए उत्पत्ति 3 में उस दुनिया में जो अंधकार आया, वह दुनिया की रोशनी से प्रकाशित हो रहा है, यूहन्ना 1:4-5 और 8:12। प्रामाणिक रूप से बोलते हुए, जॉन 1:1-5 एक वैचारिक प्रक्षेपवक्र में अपना स्थान लेता है जो उत्पत्ति 1 और 2 से शुरू होता है। यह यशायाह 65 और 66, जॉन 1, 2 पीटर 3 के माध्यम से आगे बढ़ता है, और प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में अपने अंतिम अंत तक पहुंचता है। .

मांस रहित शब्द, शुरुआत में बनाया गया शाश्वत शब्द, जॉन 1:1, और सरकोस में शब्द , अवतरित, नवीनीकृत सृष्टि की उत्कृष्ट शुरुआत है। यीशु मूल और नई सृष्टि दोनों के एजेंट हैं।

यह जॉन के सुसमाचार पर अपने शिक्षण में डॉ. डेविड टर्नर हैं। यह सत्र 21, उत्पत्ति 1 और जॉन 1 है।